आगामी आपातकालके लिए संजीवनी :

स्वसम्मोहन उपचार - खण्ड २

यौन समस्याओंके लिए स्वसम्मोहन उपचार

(Hindi)

किशोरवयीन, युवा एवं विवाहितों की यौन समस्याओंका उपचार !

भूमिका

'सम्मोहन उपचारशास्त्र' इस शृंखलाका यह तीसरा ग्रन्थ है । पहला ग्रन्थ है, 'सम्मोहनशास्त्र' । इसमें सम्मोहनशास्त्रकी जानकारी दी है । दूसरा ग्रन्थ है, 'सुखी जीवन हेतु सम्मोहन-उपचार' । इस ग्रन्थमें मानसिक विकारोंके लिए कारणभूत एवं साधनामें बाधा डालनेवाले स्वभावदोष एवं कुछ विकारोंका निर्मूलन कैसे करें, इसकी सैद्धान्तिक जानकारी दी गई है । इस तीसरे और इसके अगले चौथे ग्रन्थमें कुछ शारीरिक विकारोंपर उपचार कैसे करें, इसकी जानकारी दी गई है । पांचवें और छठे ग्रन्थमें मानसिक विकारोंपर स्वयं उपचार कैसे करें, इसकी जानकारी दी गई है ।

इस ग्रन्थमालामें विकारके कारणके अनुसार नहीं; अपितु लक्षणोंके अनुसार वह शारीरिक है अथवा मानसिक, इसका विचार किया गया है, उदा. यद्यपि अधिकांश यौन समस्याएं मानसिक कारणोंसे उत्पन्न होती हैं, तब भी उन विकारोंमें शारीरिक लक्षण दिखाई देते हैं, इसलिए उन्हें शारीरिक विकारोंके गुटमें रखा गया है ।

मानसिक विकार अगले चरणका हो, तब भी रोगी स्वयं ही स्वयंपर उपचार नहीं कर सकता । ऐसे समयपर कोई भी अभ्यासी तथा लगन रखनेवाला व्यक्ति सम्मोहन उपचारशास्त्रका अभ्यास कर रोगीपर उपचार कर सकता है । उपचार करना सुलभ हो, इस हेतु इस ग्रन्थमें विविध लैंगिक विकारोंपर उपचार करनेके उदाहरण विस्तृतरूपमें दिए हैं । उन्हें पढकर प्रत्यक्ष उपचार करनेके सन्दर्भमें दिशा मिलेगी ।

१. कुछ वर्ष पूर्व विविध नियतकालिकोंमें इस सन्दर्भमें लिखित लेखोंपर आधारित ग्रन्थ संकलित करनेका उद्देश्य

१९८४ से १९९० के कालखण्डमें शारीरिक एवं मानसिक विकारोंपर सह्याद्री, लोकप्रभा, सर्वज्ञानी, मुंबई सकाळ, गावकरी, सर्वज्ञानी आदि अनेक मराठी नियतकालिकोंमें हमारे [डॉ. जयंत आठवले एवं डॉ. (श्रीमती) कुंदा जयंत आठवलेजीके] प्रकाशित लेखमालाओंपर यह ग्रन्थ आधारित है। वर्ष १९९५ में मैं 'सम्मोहन उपचार-विशेषज्ञ'के रूपमें रोगियोंपर उपचार करना बन्द कर साधना करने लगा । इसलिए इस ग्रन्थमें इससे पूर्वके लेख लिए हैं । सम्मोहन उपचारकी पद्धतियां तथा उनके परिणामोंके सन्दर्भमें नवीनतम पद्धतियां अभी भी उपलब्ध नहीं हैं; इसलिए पुराना ही सार लिया गया है । साधनाकी पद्धतियां पुरानी नहीं होतीं, वैसा ही यह भी है ।

२. उदाहरणोंका चयन

अ. 'रोगी उपचारके लिए ८-१० बार आया और ४-५ माहमें स्वस्थ हो गया', ऐसे लेखसे पाठक कुछ भी सीख नहीं पाते । एक वर्षसे भी अधिक समय अथवा वैशिष्ट्यपूर्ण उपचार करने पडे हों, तो उससे कुछ सीख सकते हैं । ऐसे उपचारोंकी जानकारी इस ग्रन्थमें दी गई है ।

आ. कुछ रोगी १०-१२ वर्षोंसे व्याधिग्रस्त थे । 'सम्मोहन उपचारद्वारा वे भी ठीक हो गए, तो उससे अल्प कालावधिकी हमारी व्याधि निश्चितरूपसे ठीक हो जाएगी', यह अधिकांश रोगियोंको निश्चित लगे, यह भी उद्देश्य कठिन रोगियोंके सन्दर्भमें लेख लिखनेका था ।

३. पूर्ण ग्रन्थमालाका अध्ययन करें !

इस ग्रन्थमें इस शास्त्रका उपयोग कर रोगीपर अथवा स्वयंपर चरणबद्ध उपचार कैसे करें, उपचारके उतार-चढाव आदि के सन्दर्भमें रोगियोंके उदाहरण देकर विषय स्पष्ट किया गया है । उपचारसम्बन्धी जानकारी किसी विकारके विषयमें हो, तब भी उसमें बताए सूत्र किसी भी विकारके सन्दर्भमें

अपनाए जा सकते हैं । ऐसा होनेके कारण जिस विकारपर हमें उपचार करने हैं, ग्रन्थका उतना ही भाग पढा, ऐसा न कर पूर्ण ग्रन्थका ही नहीं, अपितु इस ग्रन्थमालाके सभी ग्रन्थोंका अध्ययन करें । इससे उपचार करते समय आई समस्याओंपर विजय कैसे पाएं, यह ध्यानमें आएगा ।

रोगीका मन शारीरिक अथवा मानसिक समस्याके कारण उपचारपर एकाग्र नहीं हो पाता हो, तो उसपर अथवा उसे स्वयंपर सम्मोहन उपचार करना कठिन होता है । ऐसे समयपर 'आपातकालीन ग्रन्थमाला'में दिए विविध उपचार कर कष्टकी तीव्रता न्यून करें, तदुपरान्त उसपर सम्मोहन उपचार करना सम्भव होता है ।

इस उपचार-पद्धतिका अभ्यास करनेकी बुद्धि अनेक लोगोंको हो, यह भगवान श्रीकृष्णके चरणोंमें प्रार्थना है !'

- (परात्पर गुरु) डॉ. जयंत आठवले (३.१.२०१४)

आनन्दप्राप्ति हेतु सनातनका साधनासम्बन्धी लघुग्रन्थ !

प्रार्थना (महत्त्व एवं उदाहरण)

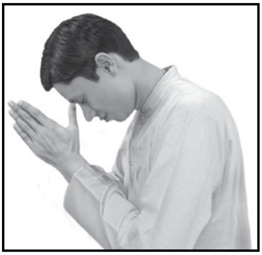

प्रार्थनासे मनोबल बढता है तथा असम्भव बातें सम्भव लगने लगती हैं । सवेरे उठनेसे रातको सोनेतक हम जो भी करते हैं तथा रोग, सेवा आदि प्रसंगोंके लिए उपयोगी प्रार्थनाएं इसमें दी हैं । विद्यार्थी, गृहिणी... सभीके लिए उपयुक्त !

अध्याय १

यौन समस्याएं

अनुक्रमणिका

१.	**हस्तमैथुनके सन्दर्भमें समाचार-पत्रोंमें छपे तथाकथित शास्त्रीय लेख पढनेसे पाठकोंको भ्रम होना**	२१
२.	**शीघ्र वीर्यपतन**	२५
३.	**नपुंसकत्व**	२६
	३ अ. प्रकार ३ आ. उपचारोंसे नपुंसकता ठीक होनेके उदाहरण	२६
४.	**समलैंगिकता (होमोसेक्श्युएलिटी)**	४६
	४ अ. लक्षण ४ आ. इतिहास	४६
	४ इ. समलैंगिकताके प्रति समाजकी दृष्टिमें समयानुकूल परिवर्तन	४६
	४ ई. अमेरिकन विशेषज्ञोंके अनुसार, समलैंगिकता विकार नहीं	४७
	४ उ. समाजमें समलैंगिक व्यक्तियोंका अनुपात	४७
	४ ऊ. प्रकार	४७
	४ ए. समलैंगिक व्यक्ति ४ ऐ. कारण	५०
	४ ओ. सम्मोहन उपचार	५१
५.	**ऐसे पाखण्डी वैद्योंसे सावधान !**	६८
	५ अ. पाखण्डी गुप्तरोग विशेषज्ञोंसे शुल्क वापस लेनेवाले रोगीका अभिनन्दन !	६९

सनातनके २९४ ग्रन्थोंकी १५ भाषाओंमें ६६ लाखसे अधिक प्रतियां !

नवम्बर २०१६ तक सनातनके २९४ ग्रन्थोंकी मराठी, हिन्दी, अंग्रेजी, गुजराती, कन्नड, तमिल, तेलुगू, मलयालम, बंगला, ओडिया, पंजाबी, सर्बियन, जर्मन, नेपाली एवं असमिया, इन १५ भाषाओंमें ६६ लाख ८२ सहस्र प्रतियां !